मुक्त शैक्षिक संसाधन

(पहला खंड)

विषय : हिन्दी[3] **कक्षा - सातवीं**

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय।

अरविन्द शर्मा : सहायक प्रोफेसर, बी बरुवा महाविद्यालय, गुवाहाटी।

डॉ० अन्जलि काकति : वरिष्ठ व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी

विष्णु कमल तामुली : व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी

शुवला दत्त शइकीया : एस.सी.ई.आर.टी., असम।

सम्पादना :
शुवला दत्त शइकीया
डॉ० अन्जलि काकति
विष्णु कमल तामुली

ग्रुप-लीडर :
शुवला दत्त शइकीया, एस. सी. इ. आर. टी., असम

पुनरीक्षण : **डॉ. अच्युत शर्मा**

अलंकरण : **विष्णु कमल तामुली**
राजनाथ पाल

डी.टी.पी. :
सुरेन रामसियारी

समन्वयक :
पार्ले फरिजा उमे कुलसुम, एस.पी.ओ (आई.ई.)
एस.एस.ए., असम
वीथिका शइकीया, प्रोग्राम एसोसिएट (आई.ई.)
एस.एस.ए., असम

मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

अधिगम के परिणाम की प्राप्ति हेतु अपनायी जानेवाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

कक्षा - सातवीं

अधिगम के परिणाम	सामग्री	शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ	प्रश्नावली	मूल्यांकन
(क) कविता/गीत, कहानी, निबंध/लेख के श्रवण और पठन का ज्ञान प्राप्त होगा।	कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि से संग्रहित और टेप-रिकार्डर की ऑडियो-विडियो क्लिप, फुटेज आदि।	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित।	(i) 'हार की जीत' शीर्षक कहानी को संक्षेप में सुनाओ। (ii) 'सुमन एक उपवन के' कविता का सस्वर पाठ करो, आदि।	सतत मूल्यांकन और सावधिक मूल्यांकन
(ख) हिन्दी में कविता/ गीत,कहानी, निबंध/ लेख, पत्र आदि कैसे लिखा जाये उसकी जानकारी प्राप्त होगी।	विद्यार्थियों के उपयोगी कविता/गीत, कहानी संकलन, पोस्टकार्ड, भिन्न पत्रों के नमूने आदि सामग्रियाँ।	क्रिया-कलाप आधारित	(i) अपने जन्मदिवस पर आमंत्रित करते हुए अपने मामा को एक पत्र लिखो। (ii) धरती, आसमान, नदी, फूल जैसे विषय पर एक छोटी-सी कविता लिखो,आदि।	
(ग) हिन्दी व्याकरण की सामान्य जानकारी के अंतर्गत संज्ञा, भूतकाल में क्रिया का प्रयोग, समानार्थी एवं विलोमार्थक शब्द आदि का सामान्य ज्ञान मिलेगा।	संज्ञा शब्द, भूतकालिक क्रिया, समानार्थी शब्द और विलोमार्थक शब्दों की अलग-अलग सूचियाँ।	क्रिया-कलाप आधारित	(i) निम्नलिखित शब्दों के एक-एक समानार्थी शब्द लिखो- माँ, विद्यालय, पत्नी, आसमान (ii)निम्नलिखित शब्दों के विलोमार्थक शब्द लिखो - दिन, सफेद, धनी, शिक्षक	
(घ) सम्बद्ध पाठों के आधार पर असम की चाय, प्रकृति के रंग-रूप, हार-जीत के महत्व और पूर्वोत्तर के पर्यटन स्थलों के बारे में भी संक्षिप्त जानकारी मिलेगी।	असम का मानचित्र, चाय बागान के चित्र, प्राकृतिक दृश्यों के चित्र, पर्यटन स्थलों के चित्र, चार्ट आदि।	निरीक्षण एवं क्रिया-कलाप आधारित	(i) अरुणाचल प्रदेश के दर्शनीय स्थलों का उल्लेख करों। (ii)असम की चाय के महत्व पर एक अनुच्छेद लिखो, आदि।	मूल्यांकन

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

कक्षा :- सातवीं **विषय :- हिन्दी[3]**

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में हिन्दी गद्य-पठन (विशेषत: निबंध) और कथोपकथन के सन्दर्भ में कमी पायी गयी। इस कमी के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :-

- प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी गद्य-पठन (विशेषत: निबंध) और विद्यार्थियों के हिन्दी में कथोपकथन के विकास सम्बंधी सम्यक् जानकारी प्राप्त होगी।
- विद्यार्थी हिन्दी में शुद्ध तथा आदर्शपूर्ण गद्य-पठन कैसे सीख पाते हैं और कैसे हिन्दी में कथोपकथन का अभ्यास कर सकते हैं- इन सबका समुचित ज्ञान हमलोगों को इस संसाधन-इकाई से मिल जायेगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

- इस संसाधन-इकाई के जरिए हमें आदर्श गद्य पठन, श्रवण सम्बंधी सम्यक् ज्ञान प्राप्ति के साथ ही शुद्ध गद्य-लेखन की पद्धति के बारे में भी मार्ग-दर्शन मिलेगा।
- इसके अलावा सम्बद्ध पाठ के माध्यम से हिन्दी गद्य की अन्यतम महत्वपूर्ण तथा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी विधा निबंध-लेखन (लेख) के बारे में भी जानकारी प्राप्त होगी।
- असम की चाय विश्व भर में प्रसिद्ध है, यह चाय असम की एक प्रमुख पहचान है- इस बात से भी हमलोग मूल पाठ के माध्यम से भली-भाँति अवगत होंगे। चाय बगीचे की संस्कृति का परिचय भी हमें मिलेगा।
- इन सबके साथ ही संदर्भित निबंध के जरिए संज्ञा और उसके प्रकारों के व्यावहारिक सामान्य ज्ञान से भी हम लोग परिचित हो सकेंगे।

सन्दर्भ पाठ :

छठा पाठ- 'चाय : असम की पहचान' (निबंध/लेख), महीना : अप्रैल।

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुत: इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति-2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है। हिन्दी साहित्य की दो प्रमुख विधाएँ हैं- गद्य और पद्य। मूलत: हिन्दी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी उनकी अपनी मातृभाषा नहीं है। फलत: हिन्दी में सुनना, पढ़ना, बोलना और लिखना उन विद्यार्थियों के लिए एक प्रकार से चुनौतीपूर्ण होता है। कभी और कहीं वे हिन्दी को शुद्ध उच्चारण, लय, गति, हाव-भाव आदि के साथ नहीं पढ़ पाते या फिर शिक्षकों द्वारा किए गये पठन को वे समझ नहीं पाते। साथ ही हिन्दी में कथोपकथन भी वे शुद्धता के साथ नहीं कर पाते। प्रस्तुत संसाधन इकाई में सन्दर्भ गद्य पाठ **'चाय : असम की पहचान'** के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी गद्य के पठन-पाठन को एकाग्रता और रुचि के साथ पढ़ेंगे, समझेंगे। चाय के बारे में बातचीत करते हुए विद्यार्थी हिन्दी में कथोपकथन या संवाद के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे। संदर्भ पाठ के जरिए विद्यार्थी चाय बागानों से जुड़े सांस्कृतिक नृत्य झुमुर और ऐसे क्षेत्रों में दौरे से यात्रा-वृत्तांत के बारे में भी ज्ञान प्राप्त करेंगे। इस संसाधन इकाई में विद्यार्थी हिन्दी की विधा निबन्ध (लेख) के सम्बन्ध में ज्ञान

प्राप्त करेंगे। साथ ही इससे विद्यार्थियों में लेखन सम्बन्धी अभिव्यक्ति का विकास होगा। प्रस्तुत संसाधन इकाई के माध्यम से पाठ्य सम्बंधित व्यावहारिक व्याकरण के अन्तर्गत संज्ञा पर सम्यक् ज्ञान प्राप्त करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

हिन्दी शिक्षण में गद्य-पठन और कथोपकथन अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के लिए आवश्यक होने के साथ ही महत्वपूर्ण भी है। हिन्दी गद्य-पठन और हिन्दी कथोपकथन में शुद्धता अपरिहार्य और अनिवार्य है। शुद्ध श्रवण से ही शुद्ध पठन और लेखन सम्भव है। हिन्दी गद्य पठन के विकास के साथ ही हिन्दी में कथोपकथन का विकास होना भी जरूरी है। प्रस्तुत संसाधन-इकाई इसी हिन्दी गद्य-पठन और हिन्दी में कथोपकथन के विकास को ध्यान में रख कर सजाया गया है। सन्दर्भित पाठ '**चाय : असम की पहचान**' के माध्यम से विद्यार्थी चाय की वर्तमान समय में महत्ता और सर्वत्र उपयोगीता के बारे में जानकारी भी प्राप्त करेंगे। चाय बागानी क्षेत्रों की सांस्कृतिक परमपरा से भी विद्यार्थी अवगत होंगे। प्रस्तुत संसाधन-इकाई के जरिए विद्यार्थी शुद्ध गद्य-पठन (निबंध), हिन्दी में कठोपकथन का ज्ञान प्राप्त करेंगे। प्राकृतिक मनोरम स्थलों की यात्रा अथवा सफर के लिए विद्यार्थी प्रोत्साहित होने के साथ-साथ हिन्दी की विधा यात्रा-वृत्तान्त के सन्धर्भ में ज्ञान प्राप्त करने के साथ इससे जुड़े आनन्द को भी प्राप्त करेंगे। व्यावहारिक भौगलिक ज्ञान भी प्राप्त करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे :

- ⇨ प्रस्तुत गद्य पाठ के माध्यम से विद्यार्थी असम के प्रमुख उत्पादन चाय के बारे में विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ शुद्ध गद्य पठन और श्रवण का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- ⇨ हिन्दी में सहभागी पठन का अनुशीलन कर पायेंगे। इसमें शुद्ध उच्चारण, सही प्रवाह से गद्य पठन के कौशल प्राप्त करेंगे।
- ⇨ हिन्दी गद्य लेखन के अंतर्गत निबंध-लेखन तथा अन्य लेखन में सामर्थ्य प्राप्त करेंगे।
- ⇨ प्रस्तुत इकाई के सहारे विद्याथियों में हिन्दी में किसी विषय पर कथोपकथन के सामर्थ्य का विकास होगा।
- ⇨ व्यावहारिक व्याकरणिक ज्ञान, विशेषत: संज्ञा के संदर्भ में सामान्य ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- ⇨ शुद्धता के साथ हिन्दी में लेखन की दक्षता प्राप्त करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए शिक्षक क्या करेंगे ? (परिकल्पना) :

- ⇨ पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और आग्रह पैदा करने के बाद अध्यापक पाठ का आदर्श सस्वर वाचन करेंगे। विद्यार्थी ध्यान और एकाग्रता से इसे सुनेंगे।
- ⇨ यथावश्यक यथासमय पाठ या पाठ्यांश का विद्यार्थियों से मौन वाचन कराएंगे। सहभागी वाचन हेतु विद्यार्थियों को छोटे-छोटे दलों में विभाजित करेंगे।
- ⇨ पाठ में उल्लिखित स्थानों की पहचान के लिए असम के मानचित्र का उपयोग करेंगे।
- ⇨ शुद्ध उच्चारण तथा वर्तनी की जानकारी हेतु यथासम्भव आवश्यक चार्ट, ओडियो-वीडियो फुटेज आदि कक्षा में उपलब्ध करायेंगे।
- ⇨ संज्ञा की सामान्य जानकारी हेतु शिक्षण ज्ञान, व्याख्या के साथ ही उपयोगी चार्ट, वस्तु आदि की व्यवस्था करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया-कलाप -1 :

(अभिप्रेरण)

अध्यापक सबसे पहले अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान की परीक्षा लेते हुए उन्हें पाठ के लिए तैयार करेंगे। इसके लिए वे विद्यार्थियों से कुछ पाठ के संदर्भ में प्रश्न पूछेंगे और विद्यार्थी उनका उत्तर देंगे। जैसे-

प्रश्न 1: बच्चो, सुबह तुमलोग अपना हाथ मुहँ धोकर क्या पीते हो ?

उत्तर : चाय।

प्रश्न 2: अच्छा, क्या चाय पीना तुमलोगों को अच्छा लगता है ?

उत्तर : जी हाँ, बहुत अच्छा।

प्रश्न 3: इसका उत्पादन कहाँ ज्यादा होता है ?

उत्तर : असम में।

प्रश्न 4: तुम सभी ने कभी चाय बागान देखा है ?

उत्तर : हाँ।

ऐसे अध्यापक विद्यार्थियों के प्रस्तुत पाठ के संदर्भ में उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा लेते हुए (यथासंभव उन्हें ऐसी जानकारी देकर) कक्षा में पाठ की शुरुआत करेंगे। इसमें वे चाय अथवा चायबागान या अन्य खेती, तृण, वृक्ष आदि के चित्रों का भी सहारा लेंगे। फिर पाठ के अगले स्तर के लिए आगे बढ़ेंगे।

क्रिया-कलाप -2 :

(उपस्थापन -आदर्श गद्य पठन और श्रवण)

तृतीय भाषा के रूप में उच्च प्राथमिक कक्षाओं में हिन्दी का आदर्श पठन काफी उच्च पर्याय का कौशल है। ऐसे पठन से विद्यार्थी शुद्ध उच्चारण, लय, प्रवाह और शैली के साथ हिन्दी के श्रवण और पठन दोनों में दक्षता प्राप्त करेंगे। इसी कारण इसमें हिन्दी अध्यापक की सक्रिय और महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

★ इसके लिए अध्यापक प्रस्तुत गद्य पाठ में से चुने हुए पाठ्यांश (अथवा शुरू से) को कक्षा में विद्यार्थियों के सामने शुद्ध उच्चारण, लय, गति के साथ स्वस्वर / आदर्श पठन करेंगे।

★ सुन्दर भावाभिव्यक्ति के साथ कैसे हिन्दी में पठन हो, उसके लिए आदर्श पठन करेंगे।

★ विद्यार्थियों का ध्यान वर्ण, शब्द और वाक्य में केन्द्रीभूत करते हुए पाठ के सामग्रिक अर्थ और पठन का आनन्द बरकरार रखेंगे।

★ शुद्ध उच्चारण के साथ विद्यार्थियों से भी गद्य का सस्वर पठन / वाचन करायेंगे।

★ इसके लिए यथासंभव कंप्यूटर, मोवाईल, टी.वी. अथवा प्रोजेक्टर से इण्टरनेट के सहारे जैसे गुगल, यूट्यूब आदि से प्राप्त हिन्दी वाचन/पठन का वीडियो उन्हें दिखायेंगे, सुनायेंगे। विद्यार्थी इसे देखेंगे और इसका वाचन भी सुनेंगे।

★ अध्यापक जब प्रस्तुत गद्यांश का सस्वर पठन / वाचन करेंगे तब बीच में वे विद्यार्थियों से उसका मौन अनुकरण भी करायेंगे। विद्यार्थी अपनी ऊंगलियों के सहारे अध्यापक द्वारा उच्चरित प्रत्येक शब्द का मौन पठन करेंगे।

★ अपने द्वारा किये गए पठन के साथ-साथ अध्यापक स्वयं विद्यर्थियों के इसके प्रति मनोयोग या एकाग्रता का निरीक्षण करेंगे। ऐसा करने से-

(क) विद्यार्थी पठन के साथ मनोयोग एवं एकाग्रता से जुड़े रहेंगे।

(ख) इसमें विद्यार्थी लय, यति, प्रवाह पठन के संदर्भ में कब, कैसे और कहाँ होते हैं, इसकी साथ-साथ खोज भी करते रहेंगे।

क्रिया-कलाप -3 :

(सहभागी पठन / वाचन और सस्वर पठन, उच्चारण /

इसके लिए विद्यार्थी अथवा विद्यार्थियों से अध्यापक हिन्दी में सहभागी पठन अथवा सस्वर वाचन करायेंगे। वे प्रस्तुत पाठ या अन्य पाठ से कुछ चुने हुए पाठ्यांश देंगे। विद्यार्थी छोटे-छोटे दल में विभाजित होंगे और एक दूसरे का पठन सुनेंगे या साथ-साथ सहभागी वाचन करेंगे।

चयनित पाठ्यांश : जैसे-

साधारणत: चाय बगीचों में पत्ते तोड़ने का काम ज्यादातर महिलाएँ करती हैं। इसके बाद पत्तों को सी.टी. सी मशीन पर दिया जाता है। इस तरह मशीन से कई प्रकार की चाय निकाली जाती है। यहाँ से कुछ ही दूरी पर जोरहाट के टोकलाई में विश्व का प्रथम और एशिया का सबसे बड़ा चाय का रिसर्च सेंटर 'टोकलाई टी रिसर्च सेंटर' अवस्थित है। मौका मिले तो हम कभी इसे देख लेंगे।

★ दल में से एक विद्यार्थी उक्त पाठ्यांश / गद्यांश का वाचन करेंगे और बाकी विद्यार्थी साथ-साथ पढ़ेंगे। अथवा बारी-बारी से विद्यार्थी प्रस्तुत गद्यांश का सस्वर वाचन करेंगे।

कठिन शब्दों का उच्चारण और वर्णों का उच्चारण करायेंगे। जैसे - चाय, बगीचों, पत्ता, तोड़ने, ज्यादातर, मशीन, रिसर्च आदि।

वर्ण / युक्ताक्षर जैसे : च, त्त, ड़, श, स्व, छ आदि।

★ बीच में अध्यापक निम्नलिखित सवाल भी पूछेंगे :

जैसे:

प्रश्न : चाय के पत्ते ज्यादातर कौन तोड़ते हैं ?

उत्तर : चाय के पत्ते ज्यादातर महिलाएँ तोड़ती हैं।

प्रश्न : तोड़ने के बाद चाय के पत्ते किस मशीन पर डाले जाते हैं ?

उत्तर: सी.टी. सी मशीन पर।

प्रश्न : विश्व का प्रथम और एशिया का सबसे बड़ा चाय अनुसंधान सेंटर कहाँ है ?

उत्तर: टोकलाई टी रिसर्च सेंटर और यह जोरहाट में है।

★ इसमें-

(क) विद्यार्थी प्रस्तुत गद्यांश को समझेंगे और एकाग्रतापूर्वक सुनकर पूछे गए सवालों के उत्तर देंगे।

(ख) चाय की उपयोगिता अथवा इसके लिए क्या आवश्यक बातें हैं अर्थात इसके अनुसंधान, चाय के भिन्न प्रकार के उत्पादन सम्बंधी मूल्यांकन कर पायेंगे।

आइए, हम सब सोचें :

★ प्रस्तुत गद्यांश का सहभागी पठन सभी विद्यार्थियों को क्या समेट लेंगे ?

★ उक्त गद्यांश के सस्वर पठन, सहभागी पठन से उन्होंने क्या-क्या सीखा ?

★ क्या विद्यार्थियों के लिए यह पठन उपयोगी है ?

★ शिक्षक और विद्यार्थियों में सह सम्बंध स्थापित हो सकेगा क्या ? आदि।

क्रिया-कलाप -4 : क्षेत्र अध्ययन :

(कक्षा के विद्यार्थियों के लिए सस्वर पठन / वाचन और सहभागी वाचन / कथोपकथन की सफलता के लिए उपयोगी क्षेत्र अध्ययन)

प्रणव बरुवा एक हिन्दी शिक्षक हैं। वे कक्षा सातवीं में हिन्दी विषय का पाठदान करते हैं। '**चाय : असम की पहचान**' के पाठदान कार्य के संदर्भ में उनका अनुभव इस प्रकार है :

मैंने प्रथमत: कक्षा के सभी विद्यार्थियों को प्राय: मण्डलाकार के रूप में मेरे चारों ओर बिठाया। सामान्य रूप से दिव्यांग एवं पिछड़े तथा गरीब परिवार के बच्चों को आगे बिठाया। पठन से पहले ही मैंने उन्हें समझाया कि मैं उनको '**चाय : असम की पहचान**' के बारे में पढ़ाऊँगा और वे सभी (यथावश्यक) मौनतापूर्वक सुनेंगे और कभी वे भी मेरे साथ ही पढ़ेंगे। ऐसा करने पर वे भी जोर तथा स्पष्टता के साथ पढ़ेंगे, उनका उच्चारण करेंगे। अब उन्हें प्रस्तुत पाठ को खोलने / निकालने के लिए भी कहा। इस तरह मैंने मेरी निर्देशना को समझ पाया या नहीं उसकी भी परीक्षा ली।

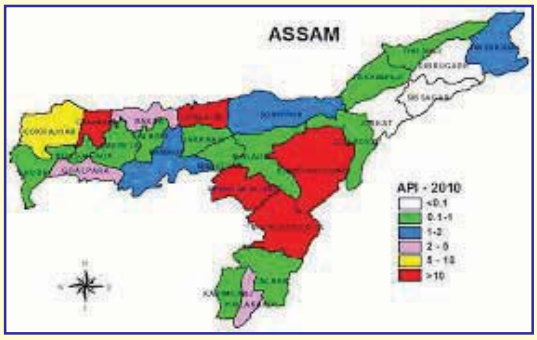

जब विद्यार्थी इसके लिए तैयार हुए मैंने पहले पृष्ठ से ही शुद्धता, स्पष्टता, सही लय और प्रवाह के साथ पढ़ना शुरू किया-शब्दों पर अपनी उँगली फेरकर। विद्यार्थियों ने भी वैसा ही किया। एक दूसरे को देखकर सभी ने धीरे-धीरे ऐसा ही किया। क्रमश: उनका आत्म विश्वास भी बढ़ता गया। यथासंभव मैंने उन्हें सही अंग-संचालन से भी समझाने की चेष्टा की। बीच में उनकी एकाग्रता व समझ की परीक्षार्थ मैंने एकाध छोटे सवाल भी किए। जैसे :-

(i) चाय बागानी क्षेत्र का प्रमुख नृत्य क्या है ?

(ii) सेहत के लिए हमें क्या पीनी चाहिए ?

(iii) 'चाय' शब्द कहाँ से आया है- ? आदि।

चूंकि विद्यार्थी पाठ और कक्षा से जुड़े हुए थे इसलिए उनका उत्तर भी सकारात्मक ही आया। इस तरह मेरे पठन पूरे होने के पश्चात मैंने उनसे इसका मौन वाचन कराया और सहभागी वाचन भी।

आइए, हम सब सोचें :

★ प्रणव बरुवा ने कैसे आदर्श पठन शुरू किया ?

★ प्रणव बरुवा ने विद्यार्थियों को कैसे पाठ या पठन लिए प्रस्तुत किया ?

★ प्रस्तुत पाठ्यांश के पठन के संदर्भ में प्रणव बरुवा की कौन-सी बात अच्छी लगी या हम कोई दूसरा उपाय करते ?

आदर्श / सहभागी / मौन पठन की सफलता हेतु आप किसी दूसरे शिक्षक / शिक्षिका की भी सहायता ले सकते हैं। केवल इसमें कुछ ऐसी बातों का ध्यान रखें-

★ विद्यार्थियों की रुचि

★ प्रस्तुत विषय से विद्यार्थी कितना परिचित है ?

★ प्रस्तुत विषय की स्थानीय महत्ता आदि।

क्रिया-कलाप (पठनोत्तर) -5 :

(हिन्दी में लेखन दक्षता और इसका सामान्य ज्ञान तथा सामान्य व्यावहारिक व्याकरण (संज्ञा) ज्ञान)

इस तरह हिन्दी के प्रस्तुत पाठ सम्बंधी वाचन/पठन आपके द्वारा समाप्त होने के पश्चात कक्षा के विद्यार्थी इसे समझ पाये या नहीं या फिर सीख पाये या नहीं, इसे जानने के लिए उनसे ही पाठ की पुनरावृत्ति करायेंगे। यथावश्यक विद्यार्थियों को छोटे दलों में विभाजित करेंगे और निम्नलिखित बातों पर ध्यान देंगे :

- ★ सभी विद्यार्थियों ने समरूप से इसमें भाग लिया या नहीं ?
- ★ इससे विद्यार्थियों के मूल्यांकन में मदद मिली है या नहीं ?
- ★ अधिगम में सभी विद्यार्थी समता से आगे बढ़ पाये या नहीं ?

इसके लिए अध्यापक कुछ प्रश्नों का लिखित अभ्यास भी करायेंगे-

जैसे :-

(i) शबनम और रोहन ने रास्ते में क्या-क्या देखा ?

(ii) चौराहे पर किसकी भीड़ थी। वहाँ क्या चल रहा था ?

(iii) असम का पहला चाय बगीचा कौन-सा है ?

(क) चेलेंग चाय बगीचा (ख) चिनामरा चाय बगीचा

(ग) चाबुवा चाय बगीचा (घ) डिकम चाय बगीचा।

(iv) टिप्पणी लिखिए : झुमुर, बिहु।

(v) चाय, गाय, तेजपुर, चोरी, तैरना आदि किस प्रकार के संज्ञा शब्द हैं ?

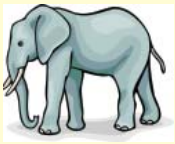

पूछे गए सवालों के उत्तर लिखित या मौखिक रूप में विद्यार्थियों से लेंगे। झुमुर, बिहु आदि के बारे में बोलेंगे, समझायेंगे। यथासंभव चित्र, वीडिओ फुटेज दिखाएंगे और सुनायेंगे। विद्यार्थियों में बिहु और झुमुर आदि नृत्य की प्रतियोगितायों का आयोजन करेंगे। तब इसके प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। इनके बारे में वे बेहतर जानेंगे। संज्ञा के संबंध में आप उन्हें यह कहेंगे कि **जिस शब्द से किसी जाति, वस्तु, व्यक्ति और गुण आदि के नाम का बोध हो वही शब्द संज्ञा शब्द होता है।** पाठ के आधार पर सोदाहरण इसे समझायेंगे। विद्यार्थियों से इसका अभ्यास करायेंगे।

सारांश :

प्रस्तुत संसाधन-इकाई 'चाय : असम की एक पहचान' के माध्यम से आदर्श हिन्दी पठन-सस्वर पठन, मौन पठन और सहभागी पठन पर आलोकपात किया गया है। साथ ही हिन्दी में उच्चारण, लय, प्रवाह और हिन्दी में लेखन की अभिव्यक्ति में विद्यार्थी को सक्षमता प्रदान करना भी इसका उद्देश्य रहा है। हिन्दी गद्य विधाओं में निबंध लेखन तथा अन्य लेखन में विद्यार्थियों के सामर्थ्य को बढ़ाना, सामान्य कथोपकथन, व्याकरण आदि का ज्ञान देना भी प्रस्तुत संसाधन-इकाई का उद्देश्य है।

अतिरिक्त संसाधन :

- ★ **Natinal Book Trust of India http://www.nbtindia.gov.in.**
- ★ **www.Tess-India edu.in.**
- ★ **http://www.ncert.nic.in.**

संदर्भ ग्रन्थ-सूची :

- ★ **TESS India Metarials**
- ★ **E Pathshala Metarials**
- ★ **Learning Outcomes at the Elementary Stage by SCERT.Assam.**

सुदृढ़ीकरण :

अध्यापक चाय के अलावा असम की अन्य वनज खेती के बारे में विद्यार्थियों को बतायेंगे और विद्यार्थियों को उसके बारे में टी.वी., समाचार-पत्र या अन्य पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान जुटाने के लिए कहेंगे या उनसे जुटवायेंगे। साथ ही हिन्दी में पठन, श्रवण, लेखन के अलावा अन्य हिन्दी विधाओं के प्रति जैसे - भ्रमण-वृत्तान्त, कहानी, कविता, गद्य आदि के बारे में भी समझा देंगे।

विस्तारित गतिविधियाँ :

अध्यापक विद्यार्थियों को चाय जैसी अन्य महत्वपूर्ण दो या तीन असम की प्रमुख उत्पादित वस्तुओं के बारे में लिखने / टिप्पणी प्रस्तुत करने का निर्देश देंगे।

प्रश्न-भण्डार :

(क) असम में पाये जाने वाले किन्हीं दो अन्य वनज / खनिज उत्पादों पर टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।
(ख) बिहु और बागुरुम्बा नृत्य पर निबंध लिखिए।
(ग) किसी भी विषय पर दो जनों का एक वार्तालाप हिन्दी में प्रस्तुत कीजिए।

प्रस्तुतकर्ता : **विष्णु कमल तामुली,** व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक
प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी ।

पुनरीक्षण : **डॉ. अच्युत शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
गुवाहाटी विश्वविद्यालय

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में कहानी के श्रवण, पठन, कथन और लेखन के सन्दर्भ में कमी पायी गयी। इस कमी के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :-

- ⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी गद्य साहित्य की एक अन्यतम रोचक विधा 'कहानी' की सम्यक् जानकारी प्राप्त होगी।
- ⇨ कहानी कैसे सुनी जाए, कैसे पढ़ी जाए, कैसे कही जाए और कैसे लिखी जाए-इन सबका समुचित ज्ञान हमलोगों को इस संसाधन-इकाई को सही तरीके से सीखने-समझने से मिल जाएगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

- ⇨ इस संसाधन-इकाई के जरिए हमें कहानी के श्रवण, पठन, कथन और लेखन संबंधी सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति के अलावा इस कला से जुड़ा हुआ आनन्द भी मिलेगा। सम्बद्ध कहानी से नैतिकता और सदाचार का पाठ भी प्राप्त होगा।
- ⇨ मानव जीवन पर पड़ने वाले कहानी के प्रभाव की अनुभूति भी हमें होगी।
- ⇨ सन्दर्भित कहानी के जरिए भूतकाल में क्रिया के प्रयोग संबंधी व्यवहारगत व्याकरणिक ज्ञान से भी हमलोग परिचित हो सकेंगे।

सन्दर्भ पाठ :

सातवाँ पाठ - 'हार की जीत' (कहानी), महीना : मई

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुत: इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति 2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है। किस्से-कहानियों का प्रचलन हमारे समाज में अत्यन्त प्राचीन काल से ही रहा है। परन्तु कलात्मक कहानियाँ आधुनिक काल में ही रची गयी हैं। कहानी वस्तुत : मनुष्य के यथार्थ जीवन की काल्पनिक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति हुआ करती है। इससे हमें भरपूर आनन्द के साथ-साथ जीवन के लिए उपयोगी नैतिकता एवं सदाचार की शिक्षा भी मिलती है। हमें इन बातों की जानकारी होनी चाहिए कि कहानी किस प्रकार से सुनी-सुनायी जाती है, पढ़ी-पढ़ायी जाती है, लिखी-लिखायी जाती है, इत्यादि। इन्हीं बातों को इस संसाधन-इकाई में 'हार की जीत' शीर्षक पाठ के सन्दर्भ में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

कहानी बच्चों के लिए मनोरंजन का साधन होने के साथ ही यह नैतिकता का पाठ भी पढ़ाती है। बड़ों के मुँह से कहानी सुनना बच्चों को अच्छा लगता है। स्वाभाविकतया इसके प्रति विद्यार्थी की रुचि और ध्यान रहते हैं। कहानी सुनकर विद्यार्थी श्रवण में दक्षता प्राप्त करते हुए शुद्धता से पढ़ने का ज्ञान प्राप्त करते हैं। शुद्ध श्रवण से शुद्ध पठन की सम्प्राप्ति होती है और मनोरंजक तथा ज्ञान देनेवाली बच्चों की उपयोगी कहानी से वे इसके श्रवण, पठन के अलावा इसपर रचनात्मक दक्षता भी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह प्रस्तुत संसाधन इकाई से विद्यार्थियों के साथ हम सभी कहानी के पठन, श्रवण और लेखन का महत्व समझ पायेंगे।

प्रस्तुत संसाधन इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे ? :

- ⇨ कहानी के पठन, श्रवण, कथन और लेखन के कौशल का ज्ञान मिलेगा।
- ⇨ कहानी के श्रवण और पठन आनंददायी सीखन-शिक्षण में कैसे उपयोगी हैं-यह बात मालूम होगी।
- ⇨ कहानी के जरिए नैतिकता और सदाचार की सीख प्राप्त करेंगे।
- ⇨ पाठ आधारित सामान्य व्याकरण के अंतर्गत क्रिया के बारे में सामान्य ज्ञान भी हमें मिलेगा।
- ⇨ कहानी, किस्से आदि के लेखन और इनके सृजन हेतु विद्यार्थियों के साथ हम सब प्रेरित होंगे।

प्रस्तुत संसाधन इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे ? (परिकल्पना) :-

- ⇨ अध्यापक नियमित रूप से कक्षा में विद्यार्थियों के उपयोगी कहानी, किस्से आदि सुनायेंगे। इनमें निहित भाव और संदेश को उन्हें समझायेंगे और लिखवायेंगे भी।
- ⇨ शुद्धता से पाठ्य पुस्तक में निर्धारित कहानी का पठन-पाठन करेंगे, साथ ही विद्यार्थियों से भी इसका वाचन करवायेंगे। आवश्यकीय व्याख्या देंगे, प्रश्न पूछेंगे और उनका हल बतायेंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों से अध्यापक सहजता से प्राप्त छोटी-छोटी कहानियों का संग्रह करवायेंगे और संगृहीत कहानियों को वे अन्य विद्यार्थियों के सामने कह कर सुनायेंगे।
- ⇨ अध्यापक किसी विषय, घटना या नैतिकता की सीख सम्बन्धी विषय या बात पर विद्यार्थियों से कहानी लेखन का अभ्यास करायेंगे। इसके लिए अध्यापक आवश्यक मार्ग-दर्शन करेंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों में कहानी-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करेंगे। ऐसा करने पर कहानी-लेखन के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी, चिंता और कल्पना का विकास होगा। उनकी सृजनात्मक दक्षता बढ़ेगी।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया-कलाप -1 :

(अभिप्रेरण)

अध्यापक कक्षा में उपस्थित होकर प्रस्तुत इकाई अथवा पाठ के प्रति विद्यार्थियों की रुचि अथवा आग्रह के लिए पाठ की शुरुआत से पहले ही चेष्टा करेंगे। इसके लिए वे कोई आकर्षक कहानी/किस्सा या चित्र-कथा प्रस्तुत करेंगे। आवश्यक सवाल भी पूछ सकते हैं। जैसे :-

प्रश्न 1: बच्चो, क्या तुम्हारे घर में कोई दादा-दादी या बुजुर्ग हैं ?
उत्तर : हाँ -हाँ, गुरुजी।
प्रश्न 2: वे तुमलोगों को क्या कभी कुछ सुनाते हैं ?
उत्तर : हाँ, सुनाते हैं और हम सुनते हैं।
प्रश्न 3: वे तुमलोगों को क्या-क्या सुनाते हैं ?
उत्तर : किस्से, पौराणिक कथा, कहानी आदि।
प्रश्न 4: क्या तुमलोगों को कहानी सुनना अच्छा लगता है ?
उत्तर : हाँ। बहुत अच्छा।
प्रश्न 5: तो क्या आज मैं एक कहानी सुनाऊँ, पढ़ाऊँ ?
उत्तर : हाँ गुरुजी, जरूर, सुनाइए, पढ़ाइए।

ऐसे जब अध्यापक पहले विद्यार्थियों की रुचि या ध्यान पाठ या इकाई के प्रति उत्पन्न कर लेंगे तभी वे पाठ के अगले कदम की ओर बढ़ेंगे।

क्रिया-कलाप -2 :

(उपस्थापन-कहानी कथन और श्रवण/पठन)

कक्षा में कहानी-कथन शिक्षण का एक सशक्त माध्यम है। यह कहानी मजेदार, प्रेरणादायी तथा नैतिक शिक्षा की धूरी भी हो सकती है। ये श्रोताओं यानी विद्यार्थियों को दैनिक जीवन से दूसरी काल्पनिक दुनिया में ले जायेंगी। उनके मन में नए विषयों के प्रति चिंतन को जगायेंगी तथा भिन्न समस्याओं और अनुभवों को कल्पना और भावना के मिश्रण से मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति देने में सहायक होंगी।

पहले अध्यापक प्रस्तुत कहानी 'हार की जीत' की समुचित कथा को श्रुति-मधुरता के साथ विद्यार्थियों को सुनायेंगे और समझायेंगे। विद्यार्थी एकाग्रता के साथ उसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे। कहानी में निहित नैतिक शिक्षा को वे भली-भाँति इसके तात्पर्य सहित विद्यार्थियों को बतायेंगे। इसके साथ उदाहरण के लिए अन्य आकर्षक कहानी भी यथावश्यक सुनायेंगे।

इसके बाद अध्यापक शुद्ध लय, गति, उच्चारण के साथ प्रस्तुत कहानी को पढ़ेंगे और विद्यार्थी इसे ध्यान पूर्वक सुनेंगे। इसके बाद शिक्षक विद्यार्थियों से इसका मौन वाचन भी करायेंगे। फिर उनको दलों में विभाजित करते हुए वही पाठ कक्षा में वे पुन: उन्हीं से पढ़वायेंगे। बाकी बच्चे ध्यान पूर्वक उसे सुनेंगे।

आइए, हम सब सोचें :

- ★ क्या आपके विद्यार्थी प्रस्तुत कहानी या उदाहरणार्थ कथित कहानी को ध्यान और एकाग्रता से सुन रहे हैं या नहीं ?
- ★ कहानी सुनकर उन्हें आनन्द की प्राप्ति हो रही है या नहीं ?
- ★ कहानी को पठन की शुद्धता के साथ वे पढ़ पाये हैं या नहीं ?
- ★ कहानी की अंतनिर्हित नैतिक शिक्षा को वे समझ पाये हैं या नहीं ?

क्रिया-कलाप -3 : क्षेत्र अध्ययन- 1:

(कहानी कथन के लिए प्रस्तुति)

कमल मिश्रा नगाँव के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक हैं। वे कैसे अपने विद्यार्थियों को कहानी पढ़ाते हैं, उसी का वर्णन यहाँ प्रस्तुत है-

जब मैं छोटा था तब मेरी दादी प्रत्येक संध्या मुझे एक कहानी सुनाया करती थी। मैं उन कहानियों से मोहित हुआ करता था। मैं वही मेरी दादी द्वारा व्यवहृत कुछ कौशलों का प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों को उनमें से कुछ कहानियाँ सुनाता हूँ।

इस तरह नियमित रूप से मेरे द्वारा कही गई उन कहानियों को सुनकर वे आनन्द पाते हैं। कुछ शिक्षक स्मृति से जुड़ी कहानी को बोलने-कहने में अच्छा नहीं पाते, बल्कि किताबों से पढ़कर सुनाना अच्छा पाते हैं। वास्तव में कहानी-कथन के लिए अनुशीलन और आत्मविश्वास की आवश्यकता है।

एक कहानी कथन से पूर्व मैं पहले से ही अपने काल्पनिक श्रोताओं के आगे कथन की चेष्टा करता हूँ। कहानी के भिन्न चरित्रों को मैं आवश्यकता अनुसार अलग-अलग आवाजें देता हूँ। विभिन्न अनुभवों, जैसे- दु:ख, सुख, क्रोध, आश्चर्य की अभिव्यक्ति के लिए मैं भिन्न मुखाभिव्यक्ति का व्यवहार करते हुए भिन्न शारीरिक भंगिमाओं का प्रयोग करता हूँ।

कहानी कथन या बोलने के समय अपने विद्यार्थियों का निरीक्षण करते हुए उसे उन्होंने समझा है या नहीं या उसके प्रति वे आग्रही हैं या नहीं, उसे मैं जान सकता हूँ, तदनुसार बोल सकता हूँ।

आइए, हम सब सोचें :

विद्यार्थियों को कहानी में युक्त रखने के लिए कमल मिश्रा क्या-क्या कौशल प्रयुक्त करते हैं ?

अपनी धारणाओं के साथ इन्हें मिलाकर देखिए :

★ वे अपनी आवाजों में भिन्नता लाते हैं।

★ वे अपने मुँह और हाथ से भी अभिव्यक्ति देते हैं।

★ वे विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं पर भी ध्यान देते हैं।

क्रिया-कलाप -4 : क्षेत्र अध्ययन -2 :

(स्थानीय कहानी /

नीलाश्री दास लखीमपुर के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका हैं। कैसे विद्यार्थियों द्वारा समाज से या समाज के व्यक्ति से कहानियों का संग्रह कर उन कहानियों का कैसे अन्यों के साथ उपयोग किया जाता है, उसके बारे में नीलाश्री जी का अनुभव यहाँ प्रस्तुत है।

मैंने अपने विद्यार्थियों को उनके परिवार या पड़ोसियों से कहानी सुनने के लिए कहा। इसके लिए उन्हें मैंने एक हफ्ते का समय दिया। इसके बाद उनमें से दो विद्यार्थियों को अंग-भंगिमाओं के साथ उन कहानियों को कक्षा में सुनाने के लिए कहा।

पहले वे कहानी को असमीया में बोले और मेरे सहयोग तथा प्रोत्साहन से वे फिर हिन्दी में भी बोलने लगे। इसके साथ ही स्थानीय अन्य भाषाओं से प्राप्त कहानियों का मैंने स्वयं हिन्दी में अनुवाद किया तथा सहयोगियों के माध्यम से भी अनुवाद करवाया।

इसके बाद मैंने सभी विद्यार्थियों से उन कहानियों के चरित्रों को अभिनय शैली के साथ प्रस्तुत करने और उनका चित्र बनाने के लिए भी कहा। सभी ने इसके लिए चेष्टा की।

इसतरह संगृहीत कहानियों के अपने साथियों के साथ किए गए विनिमय से कक्षा के विद्यार्थियों में अंत:सम्बंध बढ़ना भी परिलक्षित हुआ।

आइए, हम सब सोचें :

★ विद्यार्थियों को स्थानीय स्रोतों से प्राप्त कहानियों को अपनी मातृभाषा और हिन्दी भाषा में बोलने के लिए प्रेरित करने का क्या महत्व है ?

★ विद्यार्थियों में उन कहानियों के आधार पर परवर्ती समय में क्या-क्या परिवर्तन आ सकते हैं ?

★ कहानी कथन (कक्षा में) में उन्हें कैसे सहायता पहुँच सकती है ?

क्रिया-कलाप -5 :

(प्रस्तुत पाठ का अनुशीलन)

प्रस्तुत पाठ के अनुशीलन के सहारे कहानी सम्बंधी प्रश्नों का निराकरण :

एक चुना हुआ पाठ्यांश (पाठ-'हार की जीत') :

जैसे :-बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद नहीं आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड़गसिंह का भय लगा रहता था, परंतु कई मास बीत गये और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गये और इस भय को वे स्वप्न की तरह मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर धूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आंखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते और कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

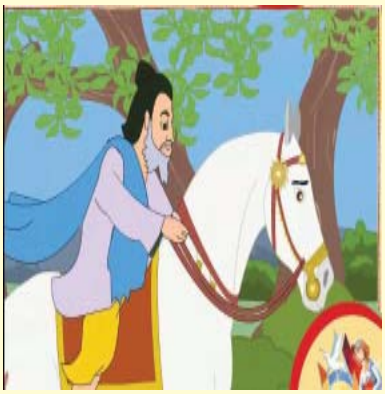

प्रश्न 1: कौन डर गये थे ?

प्रश्न 2: सारी रात बाबा भारती किसकी रखवाली करते थे ?

प्रश्न 3: बाबा भारती को किसका भय था ?

प्रश्न 4: डाकू का क्या नाम था ?

प्रश्न 5: सुलतान किसका नाम था ?

प्रश्न 6: संध्या का समय था। - यह किस काल का वाक्य है ?

उक्त अवतरण को पढ़कर विद्यार्थी उक्त प्रश्नों के उत्तर तैयार करेंगे। लिखित या मौखिक। भाषा ज्ञान, लेखन की शुद्धता नजर आयेगी। लिखने और बोलने में होनेवाली गलतियों को सुधार देने से उनमें सुधार होंगे।

इस प्रकार से विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर ढूढ़ने के लिए मन से पूरे पाठ्यांश को पढ़ेंगे। कक्षा से वे जुड़े रहेंगे।

अपनी ज्ञान-बुद्धि से सही-गलत का निर्णय कर पायेंगे और सही की प्रतिष्ठा करेंगे।

उपरोक्त उदाहरण की प्रश्न संख्या-6 के सदंर्भ में अध्यापक विद्यार्थियों को वाक्यगत क्रिया के काल (भूत काल) के संबन्ध में उदाहरण सहित समझायेंगे। जैसे-

भूत काल : सुरेश ने खाना खाया। (सामान्य भूत)

सुरेश ने खाना खाया है। (आसन्न भूत)

सुरेश ने खाना खाया था। (पूर्ण भूत)

सुरेश खाना खा रहा था। (तात्कालिक भूत)

सुरेश खाना खाता था। (अपूर्ण भूत)

सुरेश ने खाना खाया होगा। (संदिग्ध भूत)

अगर रमेश खाता, तो सुरेश भी खाना खाता। (हेतु-हेतु मद् भूत)

इस तरह इन उदाहरणों से अध्यापक भूत काल के भेदों का सामान्य ज्ञान देंगे और बताएँगे कि **क्रिया के जिस रूप से कार्य के समाप्त हो चुकने का पता चलता है उसे भूत काल कहते हैं।** इन वाक्यों को देख कर भूत काल के प्रत्येक भेद के संबध में विद्यार्थी दो-दो वाक्य बनायेंगे और शिक्षक /शिक्षिका को दिखायेंगे।

क्रिया-कलाप (पठनोत्तर)-6 :

(हिन्दी में कहानी-लेखन का अभ्यास)

इसके लिए अध्यापक अपने विद्यार्थियों को कुछ विषय या नैतिक सीख के शीर्षक देकर फिर उन्हें स्वयम कहानी-लेखन के लिए कहेंगे। इसमें आप उनका यथावश्यक मार्ग-दर्शन करेंगे। जैसे - विषय / नीतिशिक्षा / सीख :

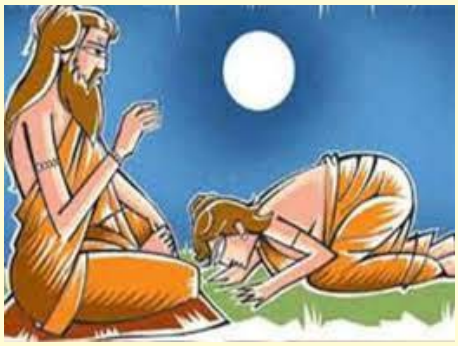

(i) एकता में परम बल है

(ii) मेहनत का फल

(iii) सच्चाई की जीत

(iv) गुरु की भक्ति

(v) माता-पिता की सेवा

(vi) खेत में धन, आदि।

इसके लिए आप अपने विद्यर्थियों को विषय का भाव अच्छी तरह से समझा देंगे। अगर हिन्दी में वे सीधे नहीं लिख पाते तो अपनी भाषा में ही लिखेंगे और बाद में उसका सहपाठी या आपके सहारे हिन्दी में अनुवाद करेंगे। उदाहरण के लिए :-

एक बूढ़ा आदमी था। उसके तीन बेटे थे, जो हमेशा लड़ाई करते थे। बूढ़ा बीमार था। उसकी यही चिंता थी कि उसके मरने के बाद वे आपस में कैसे मेल-मिलाप से रहेंगे ? एक दिन उसने एक उपाय सोचा। अपने बेटों को बुलाया। उनके हाथ में बारी-बारी एक-एक लकड़ी दी और उसे तोड़ने के लिए कहा। तीनों ने लकड़ी ली और आसानी से उसे तोड़ा।

अब बूढ़े ने तीनों लकड़ियों को एक साथ बान्धकर तीनों को बारी-बारी तोड़ने के लिए कहा। पर अब कोई भी उसे नहीं तोड़ पाया। अब उनके बाप ने उन्हें समझाया कि इस तरह लकड़ियों की भांति वे तीनों अगर अलग-अलग रहे, मेल-मिलाप से न रहे, तो आसानी से उन्हें कोई भी तोड़ यानी नुकसान कर सकता है। यदि तीनों एक साथ मेल-मिलाप से रहे तो कोई भी उन्हें हानि नही पहुँचा सकते। तब बेटों ने बूढ़े की बात समझी और तभी से वे मेल-मिलाप से रहने लगे। उन्होंने समझा कि एकता में ही शक्ति है, बल है।

इसतरह बच्चों को ऐसी कोई कथा आप देंगे जिसके सहारे वे स्वयम् कहानी लिखकर आपको दिखायेंगे। बच्चों से कहानी लिखवाने के लिए आप अपने अनुभव के आधार पर अन्य तरीके भी अपना सकते हैं।

सारांश :

प्रस्तुत संसाधन-इकाई में विद्यार्थियों से कहानी लेखन, पठन, श्रवण, कथन आदि के सम्बन्ध में आवश्यक आलोकपात किया गया है। विद्यार्थियों के स्तर तथा आयु के उपयोगी कहानी कथन और लेखन के अभ्यास हेतु पहल की गई है। कहानी के कथन और लेखन के समय इसके लिए जरूरी अभिव्यक्ति के कौशल या तरीके भी वे प्राप्त करेंगे, वे उसमें समर्थ होंगे। अपनी भाषा और हिन्दी भाषा तथा व्यक्ति और समाज के बीच संम्बध-स्थापन के कौशल की प्राप्ति में भी यह सहायक होगा।

अतिरिक्त संसाधन :

- ★ **Natinal Book Trust of India http://www.nbtindia.gov.in.**
- ★ **www.Tess-India edu.in.**
- ★ **http://www.ncert.nic.in.**

संदर्भ ग्रन्थ-सूची :

- ★ **TESS India Metarials.**
- ★ **E Pathshala Metarials.**
- ★ **Learning Outcomes at the Elementary Stage by SCERT.Assam.**

सुदृढ़ीकरण :

हिन्दी के प्रेमचन्द- जैसे अन्य प्रतिष्ठित कहानीकारों की कुछेक कहानियाँ विद्यार्थी पढ़ेंगे। कोई भी छोटी-मोटी बात या विषय लेकर बच्चे सहज और सरल कहानी लिखें-इसका निर्देश अध्यापक देंगे। ऐसा करने से कहानी विधा पर विद्यार्थियों की पकड़ और मजबूत होगी।

विस्तारित गतिविधियाँ :

आपकी कक्षा के विद्यार्थी कम से कम चार या पाँच हिन्दी या किसी भी भाषा में लिखी गयी छोटी और सरल कहानियों को चुने और उनका संग्रह करें। इसके लिए अध्यापक उन्हें आवश्यक निर्देश देंगे।

प्रश्न-भण्डार :

(क) कहानी और कविता दोनों में से आपको क्या पसंद है ? लिखिए।

(ख) नैतिकता की सीख कहानी में क्यों जरूरी है ?

(ग) अपनी पसन्द के अनुसार एक हिन्दी कहानी लिखिए।

(घ) कहानी में पात्रों की क्या भूमिकाएँ रहती हैं ?

(ङ) एक सफल कहानी में किन बातों का होना जरूरी है ?

प्रस्तुतकर्ता : **विष्णु कमल तामुली,** व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी ।

पुनरीक्षण : **डॉ. अच्युत शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

कक्षा :- सातवीं **विषय :- हिन्दी[3]**

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में पत्र-लेखन के कौशल और ज्ञान के सन्दर्भ में कमी पायी गयी। इस कमी के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :-

- ⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमलोगों को हिन्दी गद्य साहित्य की एक आकर्षक एवं नवीनतम विधा 'पत्र', विशेषत: पारिवारिक पत्र की सम्यक् जानकारी मिल जाएगी।
- ⇨ पारिवारिक पत्र का महत्व क्या है, उसका स्वरूप कैसा होता है, उसे किस प्रकार लिखा जाता है-इन सबका समुचित ज्ञान हमें इस संसाधन-इकाई को पढ़ने-समझने से प्राप्त हो जाएगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

- ⇨ इस संसाधन-इकाई के माध्यम से हमें पारिवारिक पत्र के महत्व के ज्ञान और उसके लेखन-कौशल की सही जानकारी मिलने के अलावा इस आकर्षक कला से जुड़ा हुआ आनन्द भी मिलेगा।
- ⇨ सम्बद्ध पाठ में शामिल दोनों पत्रों के माध्यम से हमलोगों को परिवार के सदस्यों के बीच के प्यार, आदर और सम्मान के भाव का अनुभव भी होगा।
- ⇨ इसके अलावा देश के महत्वपूर्ण स्थानों, पर्यटनस्थलों, सैनिकों की देश-भक्ति, कठिन परिस्थितियों में भी उनकी देश-सेवा आदि बातों से भी हमलोग कमोवेश अवगत होंगे।
- ⇨ इस संसाधन-इकाई से कल्पना और चिन्तन-शक्ति का विकास भी संभव है।

सन्दर्भ पाठ :

आठवाँ पाठ : 'अपनों के पत्र' (लेख), महीना : मई

प्रस्तावना :

पत्र का प्रचलन हमारे समाज में प्राचीन काल से ही रहा है। पत्र को चिट्ठी या खत भी कहा जाता है। पत्र कई प्रकार के होते हैं, जैसे- पारिवारिक पत्र, कार्यालयी पत्र, व्यावसायिक पत्र इत्यादि। इनमें से पारिवारिक पत्र का महत्व सबसे अलग है। सामान्यत: किसी परिवार के सदस्य एक साथ बड़े ही स्नेहपूर्वक रहते हैं। परन्तु शिक्षा, नौकरी, व्यापार-वाणिज्य, इलाज, तीर्थ-यात्रा आदि कई कारजों से परिवार के एकाध सदस्य / सदस्यों को कुछ समय के लिए या कभी कुछ दीर्घ समय के लिए दूर रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में परिवार के सदस्य पत्र के जरिए पारस्परिक स्नेह-सम्पर्क को बनाए रखने हैं। हालाँकि आज के सूचना-प्रौयोगिकी के तकनीकी युग में पारस्परिक सम्पर्क-साधन के नए-नए आकर्षक उपाय निकल चुके हैं। ऐसी स्थिति में पत्र-लेखन में जरूर कभी आयी है। पर इसके महत्व को हम आज भी अस्वीकार नहीं कर सकते। हमें इन बातों की जानकारी होनी चाहिए कि पारिवारिक पत्र का महत्व क्या है, उसके क्या-क्या अंग होते हैं, उसका लेखन-कौशल कैसा है, इत्यादि। इन्हीं बाजों को इस संसाधन-इकाई में 'अपनों के पत्र' शीर्षक पाठ के सन्दर्भ में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

उपर उल्लिखित अधिगम-परिणामों का महत्व :

मूलत: हिन्दी में पत्र-लेखन एक ऐसी विधा है जिससे बच्चों को अपने चिंतन-मनन द्वारा अपनी भावाभिव्यक्ति को लेखन के माध्यम से प्रकट करने का अवसर मिलता है। बच्चों में सर्जनात्मक लेखन-प्रतिभा के उत्तरोत्तर विकास के लिए यह अति आवश्यक है। साथ ही हिन्दी गद्य-लेखन में भी पत्र साहित्य की भूमिका अतीव महत्वपूर्ण है।

इस विधा या कला के माध्यम से विद्यार्थी अपने जनों या अन्य परिचित जनों के साथ जहाँ आवश्यक हो वहाँ सम्पर्क स्थापित करना जान सकते हैं।

पत्र-लेखन के कौशल के बारे में जानते हुए उसके माध्यम से विद्यार्थी किसी भी वस्तु, धटना, या पर्यटन स्थल आदि के बारे में भी विवरणात्मक प्रस्तुति दे सकते हैं।

प्रस्तुत संसाधन इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे ? :

- ⇨ विद्यार्थी पत्र-लेखन की कला के बारे में सम्यक ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे।
- ⇨ पत्र-लेखन के लिए आवश्यक लेखन-क्रिया-कलापों की परिकल्पना करना जानेंगे।
- ⇨ पत्र-लेखन के माध्यम से अपने अन्दर छिपी सर्जनात्मक लेखन-प्रतिभा का विकास कर पायेंगे।
- ⇨ पत्र-लेखन द्वारा अपने या किसी अन्यजनों के साथ आपसी सम्बंध, सद्भाव को बनाए रखना सीखेंगे।
- ⇨ पत्र-लेखन के माध्यम से किसी पर्यटन या विशिष्ट स्थान के बारे में विवरण प्रस्तुत कर पायेंगे।
- ⇨ पत्र-लेखन के माध्यम से देश-प्रेम या देश के प्रति अपने कर्तव्य का बोध कर पायेंगे-आदि।

प्रस्तुत संसाधन इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे ? (परिकल्पना) :

पहले कक्षा के विद्यार्थियों को संदर्भित पाठ समझायेंगे। शिक्षण की समुचित विधि के अंतर्गत पाठ को पढ़ेंगे और उसकि व्याख्या करेंगे। विद्यार्थी इसे समझेंगे। पत्र-लेखन के, विशेषकर पारिवारिक पत्र-लेखन के व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए कक्षा के विद्यार्थियों से पत्र-लेखन का अभ्यास करायेंगे। इसके लिए कोई वस्तु या घटना देंगे। उसके सन्दर्भ में पत्र किस के नाम होगा, बताएँगे। इसके लिए आवश्यक विषय को भी आप चुन सकते हैं। अपनी कक्षा के विद्यार्थियों में पत्र-लेखन का अभ्यास कराने के लिए इस पर प्रतियोगिता का भी आयोजन कर सकते हैं। ऐसा करने पर उनमें इसके लिए रुचि बढ़ेगी और एकाग्रता से वे इसका अभ्यास करेंगे। बच्चों में चिन्तन-मनन की शक्ति का विकास होगा तथा लेखन में भी शुद्धता आयेगी। पत्र-लेखन के माध्यम से हिन्दी लेखन भी सीख पायेंगे। किसी के बारे में भी विवरण प्रस्तुत कर पायेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया-कलाप -1 :

(अभिप्रेरण)

वैसे पत्र-लेखन कक्षा सातवीं स्तर के विद्यार्थियों के लिए सदैव अत्यन्त आकर्षक और मनोग्राही कला या कार्य है। इसके लिए बच्चों की रुचि सामान्य रहनी चाहिए। तथापि संदर्भित पाठ के आधार पर पाठ तथा विषय के पूर्वज्ञान की परीक्षा जरुर लेनी होगी। इसके लिए विद्यार्थियों को अध्यापक कुछ पत्र चाहे किताब से हो या अन्य प्रकार से उन्हें दिखाकर, उनके बारे में चर्चा कर, उन पर प्रश्न कर सकते हैं। जैसे :

प्रश्न 1: क्या, तुमलोगों ने किसी के नाम कभी पत्र लिखा है ?

उत्तर : हाँ।

प्रश्न 2: तुम्हारे कोई आत्मीय या परिजन कहीं बाहर रहते हैं ?

उत्तर : हाँ।

प्रश्न 3: यदि रहते हैं तो उनको कभी तुमने पत्र लिखा है या फिर वे तुम्हें कभी पत्र लिखते हैं ?

उत्तर : हाँ ! हमने भी लिखा है और कभी वे भी हमें पत्र लिखते हैं।

प्रश्न 4: क्या कभी किसी शादी का निमन्त्रण पत्र तुमलोगों ने पढ़ा है या देखा है ?

उत्तर : हाँ।

इस तरह ऐसे प्रश्नों की चर्चा से जब आपके बच्चों की पत्र-लेखन के बारे में कुछ धारणा बना पायेंगे, तब आप निर्धारित पाठ के लिए आगे बढ़ेंगे, पाठ की शुरुआत करेंगे।

क्रिया-कलाप -2 :

(पाठ का उपस्थापन - श्रवण, पठन, सहभागी पठन, कथोपकथन)

निर्धारित पाठ 'अपनों के पत्र' के बारे में बताते हुए आप इसका सस्वर वाचन करेंगे। विद्यार्थी भी एकाग्रता से सुनेंगे। फिर विद्यार्थियों को दलों में विभाजित कर उनमें से एक-एक के द्वारा वही वाचन दोहरायेंगे। ऐसा करने पर-

(क) विद्यार्थी एकाग्रता से वाचन सुनेंगे। उस पर ध्यान देंगे।

(ख) शुद्ध श्रवण से शुद्ध पठन का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

(ग) स्वयं विद्यार्थी पढ़ने के लिए उचित लय, कौशल पर ध्यान देंगे।

इसके बीच बच्चों से आप कुछ प्रश्न भी करेंगे। निरीक्षण करेंगे कि वे कक्षा और पाठ के प्रति ध्यानरत हैं कि नही ? जैसे :

1. कौन आंगन में खेल रहे थे ?
2. अरुणाचल में कौन नौकरी कर रहे थे ?
3. डाकिया क्या लाया था ?
4. तावाङ कहाँ है ? आदि।

जब बच्चे ध्यान से सुनेंगे तो प्रस्तुत पाठ्यांश के संदर्भ में निश्चित रूप से पूछे गए प्रश्नों का सही उत्तर दे पायेंगे। ऐसा करने पर क्या सही क्या गलत इसका मूल्यांकन कर सही उत्तर देंगे। इससे उनके श्रवण, पठन, सहभागी पठन की दक्षता का विकास होगा। हिन्दी में कथोपकथन करना सीख पायेंगे।

क्रिया-कलाप -3 :

(पोस्टकार्ड लेखन के जरिये पत्र लेखन के सम्बंध में लेखन ज्ञान प्राप्त करना)

क्षेत्र अध्ययन-1 :

पत्र-लेखन में पारिवारिक पत्र लेखन की सामान्य जानकारी देने के बाद बच्चों को इसके लेखन प्रति कैसे अनुप्राणित किया, इसके सम्बन्ध में नौगाँव के मति बोरा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की हिन्दी शिक्षिका रेणु शर्मा का अनुभव निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत है:

एक बार मैंने अपने एक मित्र से, जो अपने कर्म के सिलसिले में दिल्ली में रहता है, उसके द्वारा मुझे प्रेषित पोस्टकार्ड को ले जाकर अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को दिखाया। जब उन्होंने उस पोस्टकार्ड के सन्मुख पृष्ठ के एक किनारे लाल किले की छवि और इसके दूसरी ओर मेरे लिए लिखी हुई बातें देखीं, वे सभी अत्यन्त प्रसन्न हुए। मैंने उसे उन्हें पढ़ कर भी सुनाया।

उस पोस्टकार्ड के जरिए मैंने एक पाठ की परिकल्पना की और पोस्टकार्ड लेखन के माध्यम से पत्र-लेखन के प्रति बच्चों का आग्रह पैदा करने का निर्णय लिया। मैंने कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी को पोस्टकार्ड के आकार की भाँति एक-एक सफेद आर्ट पेपर का टुकड़ा दिया। कार्ड के एक पृष्ठ में उन्हें उनके मनपसंद एक-एक छवि अंकित करने को कहा।

जब उन्होंने चित्र बनाना समाप्त किया, तब मैंने उन्हें उस कार्ड को दो भागों में विभाजित करने के लिए कहा। एक पृष्ठ में उनके किसी आत्मीय जन का पता लिखवाया और उसके बाएँ किनारे उनके नाम एक वार्ता लिखवायी। श्यामपट्ट में इसके लिए कुछ नमूने के रूप में लिख दिया था। जो बच्चे अच्छे से लिखना जानते थे उन्होंने अपने पसंद से लिखा। जो न लिख पा रहे थे उनकी मैंने सहायता की। अन्त में नीचे उनका नाम लिखवाया।

मैंने उन पोस्टकार्डों के लिए कुछ डाक टिकटों की व्यवस्था कर रखी थी। जब उनसे वे सब सही स्थान पर चिपकाया, तब मैं अपने विद्यार्थियों के साथ डाकघर गयी और वहाँ डाक बॉक्स में सारे पोस्टकार्ड डलवाए। एक हफते बाद जब उनके आत्मीय जनों को वे पोस्टकार्ड मिले, इसकी सूचना पाकर मेरे विद्यार्थी आनन्दित हुए। उनके अपने जन भी कार्ड पाकर संतुष्ट हुए।

आइए, हम सब सोचें :

★ शिक्षिका रेणु शर्मा ने इस पोस्टकार्ड पर पत्र-लेखन के क्रिया-कलाप के सन्दर्भ में पोस्टकार्डों की व्यवस्था कैसे की ?

★ इससे ऊपरी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह क्रिया-कलाप कैसे उपयोगी बनायेंगे ?

इस क्रिया-कलाप में छात्र-छात्राओं को उनकी अपनी धारणा के प्रयोग से भी लिखने दे सकते हैं। अध्यापक भी आवश्यक मदद कर सकेंगे। अभिभावकों के साथ स्कूल का सम्पर्क भी ऐसे कार्डों के जरिए स्थापित कर सकते हैं। विद्यार्थी अपने दोस्तों के नाम भी पोस्टकार्ड भेज सकते हैं। अध्यापक पोस्टकार्ड लेखन के जरिए फिर विस्तृत रूप में पत्र-लेखन के स्वरूप के बारे में भी विद्यार्थियों को समझा सकेंगे।

क्रिया-कलाप -4 :

(पत्र लेखन प्रस्तुति का व्यावहारिक ज्ञान)

क्षेत्र अध्ययन-2 :

शुरुआत में ही पत्र-लेखन के बारे में विद्यार्थियों को पूरी तरह सीखा पाना या इसे सही-सही लिखवा पाना मुश्किल हो सकता है। फिर भी धीरे धीरे क्रमश: इसके लिए आवश्यक क्रिया-कलापों के माध्यम से उन्हें सिखाया जा सकता है।

हिन्दी में पारिवारिक पत्र लेखन पर व्यावहारिक प्रस्तुति के ज्ञान के लिए क्षेत्र अध्ययन-2 आवश्यक होगा। मोरिगाँव औगुरि हाईस्कूल के उच्च प्राथमिक वर्ग के हिन्दी शिक्षक केशव बोरा ने हिन्दी में बच्चों को पत्र-लेखन के व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए जो किया वह उन्हीं के शब्दों में निम्नवत है-

मैंने अपने विद्यालय के प्रधान अध्यापक, अपनी कक्षा के विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों की एक सभा का आयोजन किया। विद्यालय के अवकाश के एक दिन अपने विद्यार्थियों को कुछ सहयोगी शिक्षकों की मदद से असम के एक प्रमुख पर्यटन स्थल बरदोवा में ले जाने के लिए निश्चय किया। मार्च की पहली तारीख को जो कि दोलयात्रा का दिवस भी था, मैं अपने दो सहयोगी शिक्षक को, प्रधानाध्यापक, कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों समेट एक बस से मोरिगाँव से प्रात: 8 बजे ही बरदोवा के लिए निकला। मैंने सभी बच्चों को एक कॉपी और एक कलम साथ में लेने और पर्यटन स्थल तक रास्ते से लेकर क्या-क्या उन्हें अच्छे लगे हो, सब नोट करने के लिए कहा। बीच में कभी कुछ बातों के बारे में मैंने भी उन्हें बताया। करीब एक घण्टे के बाद जब हम बरदोवा पहुँचे तब सभी बच्चे वहाँ की शोभा, सत्र, नामघर, तालाब, पेड़-पौधे, संग्रहालय आदि मनमोहक चीजें देखकर खुशी से झुम उठे। हमने सभी बच्चों को सारी चीजे दिखायी और समझायी। नाम घर दिखाया और वहाँ का नाम-प्रसंग, कीर्तन भी सुना। भकतों से भी मिलवाया। 'फाकुवा' उत्सव के समय होने के कारण वहाँ पर मेले लगे हुए थे। बच्चों ने वह भी देखा और वे बहुत खुश हुए। एक समय एक होटल में भोजन के लिए बैठने की सुविधा पाकर उन सबके बारे में नोट भी कराया। उन लोगों ने उस समय वहाँ चल रहे 'भाओना' भी देखें। शाम होने से पहले हम अपने घर के लिए लौटे, सभी बच्चों से इस यात्रा के दौरान सुबह से लेकर शाम तक और फिर घर पहुचने तक जो-जो देखा उन सबके बारे में क्रमश: लिखकर (सफेद खुले पृष्ठ में) तीन दिन के बाद मुझे दिखाने के लिए कहा। तीन दिन बाद विद्यालय में सभी जनों ने अपनी लिखित सामग्री दिखाई। मैंने यथावश्यक भूल का संशोधन किया और उनसे भूलवशत: छुटे हुए विषय या घटना को वहाँ फिर संशोधन करवाते हुए लिखवाया। इसके बाद उसके ऊपर अपने किसी रिश्तेदार या मित्र का नाम और नीचे अपना नाम लिखवाया। फिर, उन्हीं से एक-एक

टिकट लगे हुए लिफाफे में वह लिखित पृष्ठ डलवाया जिसपर उनके रिश्तेदार या मित्र का पता लिखा हुआ था। लिफाफे की दूसरी ओर उनके अपने पते लिखवाए और फिर गोंद से लिफाफे का मुँह बंद करवा कर उन सभी लिफाफों को डाकघर के डाकवॉक्स में डलवाया।

कुछ दिनों में उन्हें अपने अपनों से पत्र पाने की सूचना मिलने लगी तो उन सभी ने बारी-बारी से मुझे बताया। इससे वे अतीव आनन्दित हुए।

आइए, हम सब सोचें :

- यात्रा के बहाने बच्चों ने कैसे पत्र-लेखन का व्यावहारिक ज्ञान पाया ?
- यात्रा-स्थान से प्राप्त ज्ञान को शामिल करके कैसे पत्र-लेखन किया जा सकता है ?
- कोई वस्तु, स्थान, घटना आदि कैसे पत्र-लेखन के लिए उपयोगी और आनन्दमयी साबित हो सकता है ?

ऐसे अथवा अपनी पसन्द के अन्य तरीकों से अध्यापक विद्यार्थियों को पत्र- लेखन का व्यावहारिक ज्ञान देंगे या देने की चेष्टा करेंगे। उन्हें यात्रा-स्थल का यथावश्यक दौरा करायेंगे। इसके अलावा बच्चों को कोई भी विषय देंगे। उसपर उनसे टिप्पणी प्रस्तुत करायेंगे और फिर पत्र-लेखन की औपचारिकता को पूर्ण करवाते हुए उसे सम्पूर्ण रूप में तैयार करवायेंगे।

क्रिया-कलाप -5 :

अध्यापक विद्यार्थियों को पत्र-लेखन के बारे में ज्ञान देने हेतु निम्नलिखित क्रिया-कलाप कराएँगे-

- सभी विद्यार्थियों को किसी वस्तु या विषय का नाम देकर उनसे पत्र प्रस्तुत करायेंगे, आवश्यक अनुशीलन करायेंगे।
- किसी पर्यटन स्थल, यात्रा विवरण का सहारा लेकर पत्र-प्रस्तुति का ज्ञान देंगे।
- किसी के विवाह का आमन्त्रण-पत्र, अभिनन्दन-पत्र, अन्य निमंत्रण-पत्र आदि के सहारे पत्र प्रस्तुत करायेंगे।
- विद्यार्थियों में पत्र-लेखन के प्रति उनकी रुचि बढ़ाने हेतु उनमें प्रतियोगिताओं का आयोजन करेंगे।

सारांश :

साधारण और सामान्य अर्थात सहज से सहज तरीके से कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों को पत्र-लेखन का उपयोगी ज्ञान दिया जा सकता है। इसके लिए कैसे व्यावहारिक अनुशीलन, लेखन उपयोगी है-इसकी जानकारी प्रस्तुत संसाधन इकाई से प्राप्त करेंगे। पत्र-लेखन के जरिए निबंधात्मक वर्णन-शैली का विकास होगा। अपनों के बीच सम्बंध स्थापित कर पायेंगे। यात्रा या सफर का विवरण पत्र-लेखन से संभव होने के कारण बड़ा ही उपयोगी है। इस संसाधन-इकाई के सहारे पत्र-लेखन के साथ ही हिन्दी-लेखन में भी बच्चे परिपक्वता प्राप्त करेंगे।

सुदृढ़ीकरण :

अध्यापक विद्यार्थियों को किसी विषय, वस्तु, स्थान आदि का नाम देंगे। विद्यार्थी इसके सहारे पत्र-लेखन का नमुना प्रस्तुत करेंगे। अध्यापक इसके लिए उन्हें यथावश्यक निर्देशन देंगे।

विस्तारित गतिविधियाँ :

विद्यार्थी पारिवारिक-पत्र, विवाह का आमन्त्रण-पत्र, अन्य निमन्त्रण-पत्र आदि पत्रों का संग्रह करके अध्यापक को दिखायेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची :

- ★ **NAS Meterials.**
- ★ **E Pathshala Metarials.**
- ★ **TESS India Metarials**
- ★ **www.ncert.nic.in**
- ★ **Learning Outcomes at the Elementary Stage by SCERT.Assam.**

प्रश्न-भण्डार :

(क) अपनी छुट्टियों में आपके द्वारा भ्रमण किये गए किसी पर्यटन स्थल की जानकारी देते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए।

(ख) ग्रीष्मकालीन अवकाश के दिनों में आपने क्या-क्या किया ? इसकी जानकारी देते हुए अपने मामा / चाचा / शिक्षक के नाम एक पत्र प्रस्तुत कीजिए।

(ग) अपने जन्म-दिवस पर निमन्त्रण हेतु मित्र / सहेली के नाम एक पत्र प्रस्तुत कीजिए।

प्रस्तुतकर्ता : **विष्णु कमल तामुली,** व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी ।

पुनरीक्षण : **डॉ. अच्युत शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय

अधिगम के परिणाम के कमजोर क्षेत्रों के सुधार हेतु प्रस्तुत मुक्त शैक्षिक संसाधन (हिन्दी)

कक्षा : सातवीं **विषय :- हिन्दी[3]**

विगत गुणोत्सव के दौरान विद्यार्थियों में कविता/ गीत के पठन / गायन, लेखन और सस्वर पाठ या आवृत्ति के सन्दर्भ में कमी पायी गयी। इस कमी के दूरीकरण हेतु यह संसाधन-इकाई प्रस्तुत है।

अधिगम के परिणाम :-

- ⇨ प्रस्तुत संसाधन-इकाई के अधिगम से हमें हिन्दी की कविता और गीत-जैसी आकर्षक पद्य विधाओं की सम्यक् जानकारी प्राप्त होगी।
- ⇨ कविता एवं गीत किस प्रकार सही उच्चारण, लय, उतार-चढ़ाव एवं हाव-भाव के साथ पढ़े तथा गाये जाएँ, सूक्ष्म भाव एवं विचार के साथ कविता एवं गीत कैसे रचे जाएँ, प्रभावकारी ढंग से कविता का सस्वर पाठ कैसे किया जाए- इत्यादि बातों का समुचित ज्ञान हम लोगों को इस संसाधन-इकाई के सही अनुधावन से मिल जाएगा।

अधिगम के परिणाम के उप-क्षेत्र :

- ⇨ इस संसाधन-इकाई के जरिए हमें कविता और गीत के पठन/गायन, लेखन और सस्वर पाठ के सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति के अलावा इस सर्जनात्मक कला से जुड़ा हुआ रस अथवा आनन्द भी मिलेगा।
- ⇨ साथ ही सम्बद्ध कविता से हमारे देश भारतवर्ष की 'अनेकता में एकता', रंग-बिरंगी संस्कृति तथा प्रकृति की आनन्दमयता का अनुभव होगा।
- ⇨ सन्दर्भित कविता के जरिए समानार्थी एवं विलोमार्थक शब्दों की सामान्य जानकारी भी हमें प्राप्त होगी।

सन्दर्भ पाठ :

नौवाँ पाठ: 'सुमन एक उपवन के' (कविता), महीना : जून

प्रस्तावना :

असम के अहिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सरकारी त्रि-भाषा सूत्र के अनुसार कक्षा छठी से लेकर आठवीं तक तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी का पठन-पाठन होता है। वस्तुत: इस मुक्त अधिगम संसाधन (हिन्दी) की प्रस्तुति के पीछे शिक्षा अधिकार अधिनियम-2009 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या नीति 2005 तथा असम सरकार द्वारा आयोजित विगत गुणोत्सव के परिणाम का आधार है। कविता और गीत हम सभी को अत्यन्त प्रिय हैं, क्योंकि इन से अत्यन्त कम समय में असीम आनन्द मिलता है। इनकी रचना अन्यन्त प्राचीन काल से वर्तमान समय तक लगतार होती आ रही है। कविता एवं गीत में मूलत: सूक्ष्म भाव, आवेग तथा अनुभूति की अभिव्यक्ति होती है। गौण रूप से इनमें विचार-चिन्तन को भी स्थान मिलता है। प्रकृति-जगत के विविध उपकरणों, जैसे-सूरज, चाँद, तारे, आकाश, धरती, हवा, फूल, पौधे, तितली, पक्षी आदि को कविता एवं गीत का हिस्सा बना लिया जाता है। हमारी रंग-बिरंगी संस्कृति की झलक भी इनमें मिल जाती है। एकता, देश-प्रेम, भाईचारा, साम्प्रदायिक सद्भावना आदि के संदेश भी गीत एवं कविता के माध्यम से दिये जाते हैं। हमें इन बातों का ज्ञान होना चाहिए कि कविता और गीत किस प्रकार पढ़े एवं गाये जाते हैं, कविता और गीत किस प्रकार से रचे जाते हैं और कविता का सस्वर पाठ किस तरह से समुचित हाव-भाव के साथ किया जाता है, आदि, आदि। इन्हीं बातों को इस संसाधन-इकाई में 'सुमन एक उपवन के' शीर्षक कविता के सन्दर्भ में आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई को सीखने-सिखाने का महत्व :

कविता, गीत, बाल गीत आदि किसी भी साहित्यिक भाषा की महत्वपूर्ण विधाएँ हैं। ये विशेषकर उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त मनोग्राही हैं। ये कविता, गीत आदि पठन, प्राक-पठन-कौशल की दृष्ठि से भी उपयोगी हैं। कविता, गीत आदि गेय और आवृत्तियुक्त भी हैं। बच्चे इन्हें गा कर आनन्द प्राप्त करने साथ ही शुद्ध

लय, उच्चारण आदि के साथ पठन और अभिव्यक्ति के कौशल भी प्राप्त करते हैं। इसके द्वारा बच्चों में लेखन सामर्थ्य का भी विकास होता है। विद्यार्थी सर्जनात्मक विकास प्राप्त करते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत इकाई का महत्व अपरिसीम है।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई से हम क्या-क्या सीख पायेंगे ?

- ⇨ हिन्दी में प्राक् पठन कौशल के रूप में कविता / पद्य पढ़ने या गाने की समर्थता प्राप्त होगी।
- ⇨ विद्यार्थियों की हिन्दी में सुधार और उन्नति के लिए गीत, कविता आदि के व्यवहार के नमूने मिलेंगे। प्रकृति-प्रेमपरक कविता के द्वारा अनेकता में एकता और सांस्कृतिक समन्वय का पाठ मिलेगा।
- ⇨ हिन्दी कविता के पठन, लेखन और सस्वर पाठ (आवृत्ति) के प्रति उत्साह बढ़ेगा।
- ⇨ विलोमार्थक और समानार्थी शब्दों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा, आदि।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए शिक्षक क्या-क्या करेंगे ? (परिकल्पना) :-

- ⇨ अध्यापक कक्षा के विद्यार्थियों के सम्मुख कोई भी गीत या कविता पढ़ने के साथ-साथ शुद्ध उच्चारण, लय, प्रवाह और हाव-भाव के साथ उसका गायन या आवृत्ति करेंगे।
- ⇨ विद्यार्थियों से उस पठित या अपठित गीत / कविता का सुन्दर रूप से वाचन, गायन और आवृत्ति करायेंगे।
- ⇨ अध्यापक कविता / गीत का पठन / गायन अंग-भंगिमाओं के साथ करेंगे। विद्यार्थी भी वैसा ही करेंगे।
- ⇨ कविता / गीत लेखन का भी अभ्यास करायेंगे। इसके लिए उनके स्तरीय विषय या नाम देकर अपने मार्ग-दर्शन में उनसे कविता / गीत भी लिखवायेंगे।
- ⇨ इनके प्रति विद्यार्थियों की रुचि और आग्रह पैदा करने के लिए अध्यापक जरूरी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करेंगे। उन्हें पुरस्कृत कर प्रोत्साहित करेंगे।

प्रस्तुत संसाधन-इकाई के लिए आवश्यक शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ :

क्रिया-कलाप -1 :

(अभिप्रेरण)

कविता बच्चों के लिए उपयोगी होने के साथ-साथ यह उनके लिए रोचक और आनन्ददायी भी होती है। अत: इसके प्रति विद्यार्थियों का सामान्यत: झुकाव या रुझान रहता ही है। तथापि पाठ या इकाई के प्रति उनकी रुचि की जानकारी हेतु उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा भी जरूरी हो जाती है। अध्यापक उनके उपयोगी दूसरे प्राकृतिक विषय पर या फूलों पर लिखी हुई एक-दो कविता गाकर या निम्नलिखित प्रश्नों के सहारे उनके पूर्वज्ञान की परीक्षा लेंगे। जैसे :-

प्रश्न 1: बच्चो, बागों में क्या खिलते हैं ?

उत्तर : फूल।

प्रश्न 2: क्या फूल आपको पसंद हैं ?

उत्तर : हाँ। बहुत पसंद हैं ?

प्रश्न 3: बागों में कितने रंगों के फूल खिलते हैं ?

उत्तर : रंग-बिरंगे, अनेक।

प्रश्न 4: बाग के अन्य नाम क्या-क्या हैं ?

उत्तर : उपवन, बगीचा, आदि।

प्रश्न 5: छोटे बच्चे क्या फूल की तरह प्यारे और कोमल होते हैं ?

उत्तर : हाँ गुरुजी। वे फूल की तरह प्यारे और कोमल होते हैं।

इसतरह विद्यार्थियों से फूल या बगीचा या उपवन के ऊपर उनकी सम्यक धारणा को अध्यापक जान लेंगे। तभी आप गीत, कविता के लिए आगे बढ़ेंगे। इसके लिए जरूरी प्राकृतिक बगीचा, फूल आदि के चित्रों का भी सहारा लेंगे।

क्रिया-कलाप -2 :

(कविता का सुर तथा लय में पठन / / /

अध्यापक सबसे पहले जब प्रस्तुत कविता के सम्बंध में बच्चों के पूर्वज्ञान की जानकारी प्राप्त कर लेंगे तब वे स्वयम् पाठ्य पुस्तक की कविता निकालेंगे और अपने विद्यार्थियों से भी पाठ्य-पुस्तक की प्रस्तुत कविता सामने रखने के लिए कहेंगे।

शुद्ध लय, उच्चारण के साथ पूरी कविता या कवितांश पढ़ेंगे, जैसे :-

''हम सब सुमन एक उपवन के।
एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जन्मे हम
मिली एक ही धूप हमें है
सींचे गए एक जल से हम।...

इस तरह अध्यापक स्वयं पद्य/पद्यांश का विद्यार्थियों के सामने वाचन करेंगे और एकाग्रता के साथ वे सुनते जायेंगे- प्रत्येक उच्चारित शब्द के ऊपर अपनी उँगली फेरते हुए।

ऐसे ही कवितांश या पूरी कविता का पठन बच्चों के सामने दोहराने के बाद बच्चों से भी इसका सहभागी वाचन करायेंगे। स्वयम् द्वारा या फिर बच्चों को दलों में विभाजित करके उनमें से एक-एक के द्वारा यह कार्य संपन्न करेंगे।

बाकी विद्यार्थी वाचन का अनुसरण करते हुए सही उच्चारण, लय, प्रवाह के साथ पद्य या कविता को पढ़ेंगे।

अध्यापक पठन में उच्चारण, लय, उतार-चढ़ाव की गलतियों को पकड़ेंगे भी और सुधारेंगे भी।

अध्यापक ध्यान देंगे :-

★ विद्यार्थियों ने मन और एकाग्रता के साथ कविता पठन में समता से भाग लिया है या नहीं ?

★ शुद्धता के साथ कविता को वे पढ़ पाये हैं या नहीं ?

फिर आप सही अर्थ के साथ सहजता और सरलता से कविता में निहित भाव की व्याख्या बच्चों के सामने करेंगे- कठिन शब्दों के अर्थ लिखवाकर:-

(कठिन शब्दार्थ लेखन) :-

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सुमन	फूल	कली	अविकसित फूल
उपवन	बाग, बगीचा	चांदनी	चांद का प्रकाश
धूप	सूर्य का प्रकाश	शोभा	सुंदरता
पवन	हवा, वायु	गुंजन	कोमल ध्वनि

क्रिया-कलाप -3 :

(सही सुर और लय के साथ हिन्दी में पद्य / / / /

1

कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों में हिन्दी में सही उच्चारण, लय के साथ कविता पठन या आवृत्ति शक्ति का विकास हो, इसके लिए नगाँव सरकारी बालिका विद्यालय की हिन्दी शिक्षिका श्रीमती फुलमाला बरुवा ने क्या किया उसी का वर्णन उन्हींके शब्दों में नीचे प्रस्तुत है :

मैंने कक्षा में अपने विद्यार्थियों को उनकी पसंद की कोई भी कविता चाहे वह हिन्दी की हो या असमीया की उसे स्वयं या घर के या फिर किसी के सहारे संग्रह करके फिर अपने सहपाठी या घर या पड़ोस के किसी जानकार व्यक्ति के सहारे एक हफ्ते तक उसका सही उच्चारण तथा अंग-भंगिमा के साथ तैयारी करने हेतु निर्देश दिया। जरूरत के मुताबिक इसमें मैंने उनकी यथावश्यक मदद की।

एक हफ्ते के बाद मैंने उनकी चुनी हुई कविताएँ लीं और उनमें कविता पठन / आवृत्ति की एक प्रतियोगिता रखी। उसमें उनके लिए पुरस्कार की भी व्यवस्था की। सभी बच्चों ने बारी-बारी से अपनी कविता पढ़ी-तुलनात्मक रूप से प्राय: सही लय, शुद्ध उच्चारण और सही भाव-भंगिमाओं के साथ। स्कूल के अन्य शिक्षकों, प्रधान अध्यापक ने भी उसे देखा, सुना। सबको उन्होंने वाह- वाही दी और विद्यालय के वार्षिक कार्यक्रम के दौरान उन्हीं की इन कविताओं की प्रतियोगिता रखने की बात कही।

इस तरह मैंने कविता पठन को आवृत्ति और अभिनय से जोड़ा तो बच्चों में इसका योगात्मक परिणाम देखा।

आइए, हम सब सोचें :

★ फुलमाला बरुवा ने कविता / गीत पठन / गायन के प्रति बच्चों की रुचि को कैसे पहचाना और उनकी प्रतिभा को बाहर लाने के लिए उन्होंने क्या किया ?

★ क्यों कविता-पठन को सिखाने में उन्होंने विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिता को उचित समझा ?

★ फुलमाला बरुवा के स्थान पर हम होते, तो क्या करते ?

क्रिया-कलाप -4,

(कक्षा में हिन्दी या अन्य भाषा में कविता / पद्य लेखन हेतु अभ्यास)

क्षेत्र अध्ययन-2 :

पूब गागलमारी आदर्श हिन्दी विद्यालय की कक्षा सातवीं के विद्यार्थियों की दक्षता और मानसिक बुद्धि के स्तर सामान्यत: अलग-अलग हैं। उनमें कविता लेखन में रुचि और प्रोत्साहन तथा सामर्थ्य प्राप्त करवाने के लिए हिन्दी शिक्षक गोविन्द सिंह ने कौन-सा उपाय किया उसका वर्णन उन्हीं के शब्दों में नीचे प्रस्तुत है :

सबसे पहले मैंने बच्चों से बागों में पाये जाने वाले फूल, उनके रंग, पत्ते, पेड़-पौधों के नाम पूछे। उनका उत्तर आया ऐसे- गुलाब, लाल, कांटा, कमल, चम्पा, चमेली, जूही, गेंदा, पीला, हरा, नीला आदि। अब इनपर उनकी समझ और सामर्थ्य के अनुसार कविता लिखने को कहा और मैंने भी उन्हीं के द्वारा बोले गए शब्दों से कविता बनाने की चेष्टा की :

जैसे :-

गुलाब के हैं फूल लाल
कांटे भी तो हैं कमाल ;
देखो तो अच्छा पाओ
तोड़ो तो खून बहाओ।
या
गुलाब लाल, लाल कमल
देखने में ये हैं बेमिसाल ;
जूही, चम्पा, गेंदा खिले
तो दीखे बाग सुन्दर और कमाल।

इस तरह से मैंने उनके द्वारा बोले गए शब्दों से ही जब कविता बनाई तो इसके प्रति उन्होंने भी रुचि दिखाई और उन्होंने भी कविता लिखने की चेष्टा की। फिर अपने प्रयास और बड़ों के सहयोग से उन्हें किसी भी विषय पर कविता लिखने के लिए मैंने निर्देश दिया और मुझे दिखाने के लिए भी कहा। विद्यार्थियों ने ऐसा ही किया। मैंने भी यथावश्यक और यथासंम्भव इसमें उनकी सहायता की।

आइए, हम सब सोचें :

★ गोविन्द सिंह ने कैसे अपने विद्यार्थियों का कविता-लेखन के प्रति ध्यान-आकर्षण कराया ?

★ क्या विद्यार्थियों ने अपने अन्दर छिपी सर्जनात्मकता के विकास के लिए चेष्टा की ?

★ गोबिन्द सिंह के स्थान पर हम होते, तो क्या करते ?

क्रिया-कलाप -5 :

(क्षेत्र अध्ययन दो के अंतर्गत बच्चों द्वारा हिन्दी भाषा में कविता लेखन के सन्दर्भ में आवश्यक परिकल्पना)

★ कैसे विषय के प्रति विद्यार्थी की रुचि बढ़े उसपर ध्यान रखना न भुलिए।

★ विद्यार्थियों को अपने मनोभाव, चिंतन तथा सर्जनात्मकता के सहारे ही कविता लिखने देंगे ।

★ उनके द्वारा लिखी हुई कविताओं / गीतों को एक साथ किताबी आकार में बांध कर रखें।

★ कविता की प्रस्तुति हेतु प्रतियोगिता का आयोजन करें या उन्हें ऐसी अन्य सुविधा प्रदान करें।

क्रिया-कलाप -6 :

(प्रश्नाभ्यास और विलोमार्थक तथा समानार्थी शब्दों का अनुशीलन)

विभिन्न क्रिया-कलापों के जरिए प्रस्तुत कविता पर सम्यक् तथा पर्याप्त अभ्यास के पश्चात् पाठ के सहारे ही अध्यापक बच्चों को प्रश्नोत्तर के जरिए विलोमार्थक और समानार्थी शब्दों का ज्ञान देंगे। जैसे :-

निम्नलिखित शब्दों को श्यामपट्ट पर लिख देंगे तथा उनको और कौन-से दूसरे नाम से कहा जाता है पूछेंगे और श्यामपट्ट पर लिखेंगे :

शब्द	**समानार्थी शब्द**
बाग	बगीचा, उपवन
फूल	पुष्प, कुसुम
सूरज	सूर्य, भास्कर
धरती	पृथ्वी, दुनिया, आदि।

अब बच्चों को आप यह समझा देंगे कि **समान अर्थ का बोध कराने वाले शब्द ही समानार्थी शब्द कहलाते हैं।**

फिर निम्नलिखित शब्दों को देकर उनसे विपरीत / उल्टे शब्द क्या होंगे पूछिए और श्यामपट्ट पर उसे लिख देंगे-

शब्द	**विलोमार्थक शब्द**
जन्म	मृत्यु
एक	अनेक
धूप	छाँव
धरती	आकाश, आदि।

ऐसे ही अध्यापक बच्चों को यह भली-भाँति समझा देंगे कि **जो शब्द किसी दूसरे शब्द का विपरीत अर्थ प्रकट करता है वही उसका विलोमार्थक अथवा विपरीतार्थक शब्द कहलाता है।**

इस तरह अध्यापक विस्तृत रूप में सहजता के साथ कक्षा के विद्यार्थियों को अन्य प्रश्नाभ्यास के साथ-साथ विलोमार्थक और समानार्थी शब्दों का ज्ञान देते हुए ज्यादा से ज्यादा अभ्यास करायेंगे ताकि वे भली-भाँति इन्हें सीख पायें, समझ पायें।

सारांश :

इस प्रकार प्रस्तुत संसाधन-इकाई में कक्षा सातवीं के हिन्दी विषय के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी कविता / गीत-लेखन / पठन और साथ ही उसमें प्रयुक्त विलोमार्थक और समानार्थी शब्दों के बोध पर आलोकपात किया गया है। विद्यार्थी अपने स्तर और सामर्थ्य के अनुसार हिन्दी या अपनी भाषा में कविता लिखकर सर्जनात्मक अभिव्यक्ति कैसे प्रकट कर पायेंगे, उसपर यथासंभव प्रकाश डाला गया है।

अतिरिक्त संसाधन :

- ★ **Natinal Book Trust of India http://www.nbtindia.gov.in.**
- ★ **www.Tess-India edu.in.**
- ★ **http://www.ncert.nic.in.**

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

- ★ **TESS India Metarials**
- ★ **E Pathshala Metarials**
- ★ **Learning Outcomes at the Elementary Stage by SCERT.Assam.**

सुदृढ़ीकरण :

अध्यापक विद्यार्थियों को उनके स्तर तथा आयु के अनुसार कविता लेखन के लिए कुछ विषय देंगे। वे इन पर यथासम्भव कविता लिखकर आपको दिखायेंगे। इसके लिए आप उन्हें आवश्यकतानुसार निर्देश देंगे।

विस्तारित गतिविधियाँ :

- ★ अध्यापक विद्यार्थियों को कम से कम तीन हिन्दी या अपनी भाषा में लिखी हुई कविताएँ, जो उन्हें पसन्द हो और घर में या पास में उपलब्ध हो, संग्रह करने के लिए निर्देश देंगे।
- ★ अध्यापक विद्यार्थियों को हिन्दी के अन्य कवियों की कविताओं का संग्रह करके उन्हें पढ़ने और उन पर चिंतन-मनन करने के लिए कहेंगे।

प्रश्न भण्डार :

(क) हमारे देश में कौन-कौन-सी संस्कृतियाँ देखी जाती हैं ? संक्षेप में लिखिए।

(ख) हमारे देश में 'अनेकता में एकता' कैसे स्थापित है ? स्पष्ट कीजिए।

(ग) आपको कविता पठन या लेखन में से क्या अच्छा लगता है ? बताइए।

प्रस्तुतकर्ता : **विष्णु कमल तामुली,** व्याख्याता, हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी ।

पुनरीक्षण : **डॉ. अच्युत शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय